बोकुडेन और योद्धा

एक जापानी लोककथा

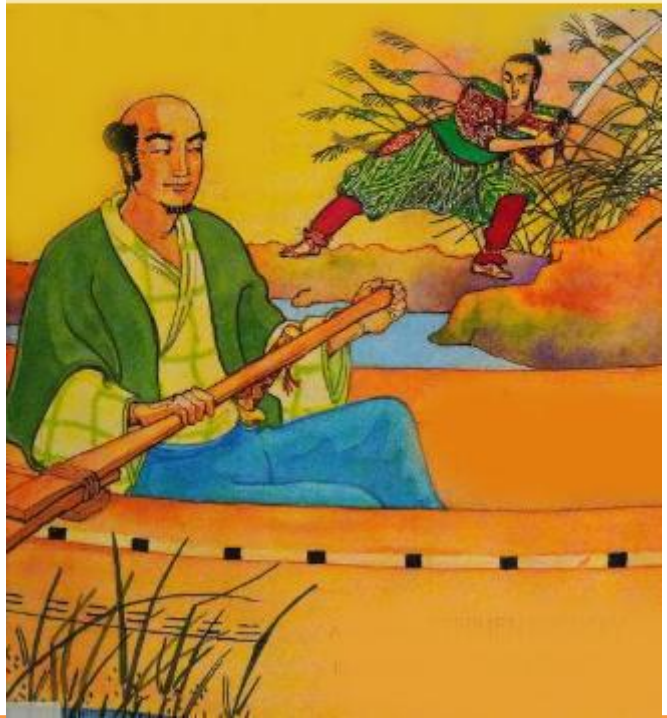

बोकुडेन और योद्धा

एक जापानी लोककथा

रूपांतरण : स्टीवन क्रेन्स्की

हिंदी : दीपक थानवी

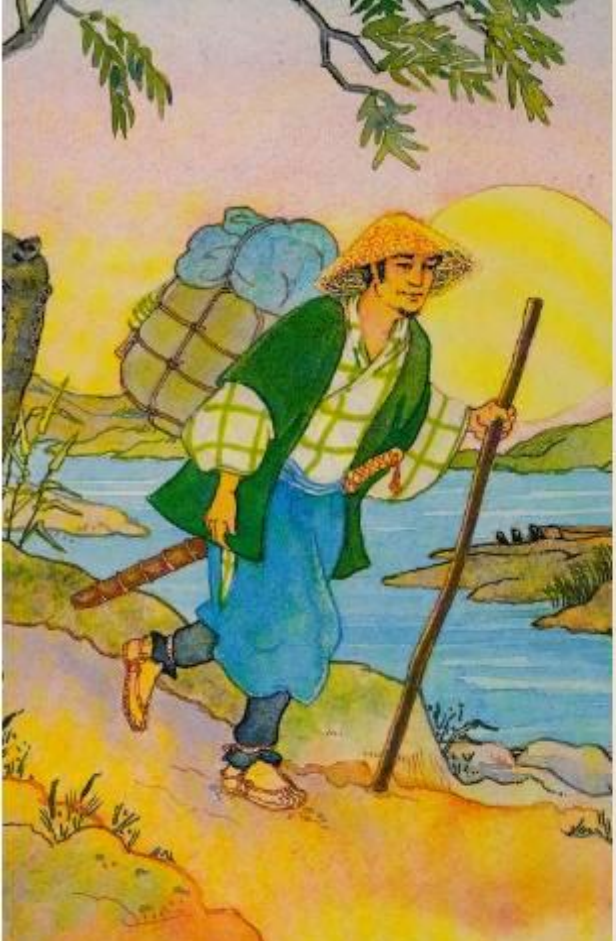

नौका की सवारी

सुकाहारा बोकुडेन बहुत उदार व्यक्ति था। वह एक अच्छा तलवारबाज़ भी था। उसका स्वभाव जिज्ञासु था। वह दुनिया की हर चीज़ को जानने की इच्छा रखता था।

कई बार, बोकुडेन घर छोड़कर दुनिया देखने बाहर निकल जाता था। राह चलते दूसरे लोगों की तरह, वह हमेशा साधारण कपड़े ही पहनता था। लेकिन वह साथ में अपनी तलवार ज़रूर रखता था क्योंकि कुछ जगहें एक अकेले यात्रा कर रहे व्यक्ति के लिए खतरनाक होतीं थी। बोकुडेन को यात्रा के दौरान नई जगहों पर से और रास्ते में मिले नए लोगों से बहुत कुछ नया सीखने को मिलता था। और वह वैसे भी कुछ सीखने को आतुर रहता था।

एक यात्रा के दौरान, बोकुडेन एक विशाल नदी के पास आया। नदी के किनारे पर एक नौका थी। इस नौका की मदद से यात्री एक जगह से दूसरी जगह आते-जाते थे।

सारे यात्री एक पंक्ति में खड़े थे। टिकट खरीदने के लिए। बोकुडेन भी अन्य सभी यात्रियों की तरह अपनी बारी का इंतजार कर रहा था। वहाँ केवल एक व्यक्ति में धीरज की कमी थी।

एक योद्धा धक्का-मुक्की करता हुआ पंक्ति में सबसे आगे पहुँचने की कोशिश कर रहा था। वह बहुत क्रोधित था। उसकी लंबाई वहाँ खड़े सभी यात्रियों से ज़्यादा थी। उसका सिर भी बड़ा था।

"बीच से हटो," योद्धा बोला।

उसने एक किसान का कंधा झपटकर पकड़ लिया। और बोला, "तुम मेरी जगह खड़े हो।"

किसान को उस योद्धा का बर्ताव देखकर आश्चर्य हुआ। उसने कहा, "यह तुम्हारी जगह नहीं है। तुम तो अभी-अभी यहाँ आये हो।"

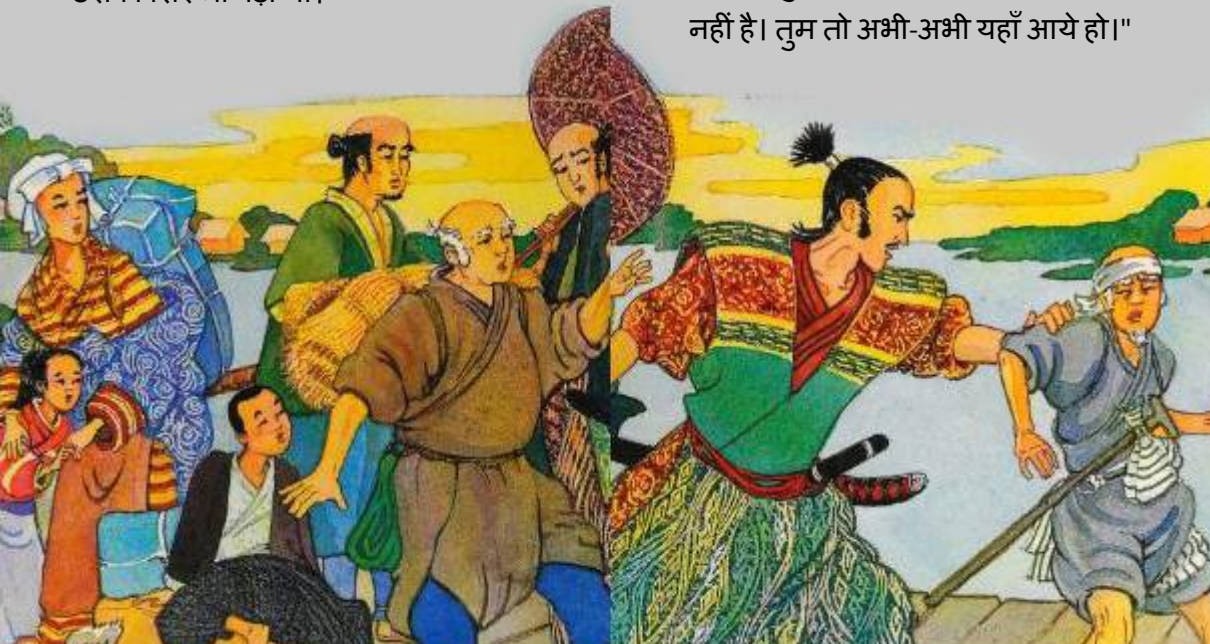

योद्धा बोला, "तुमने सही कहा। मैं अभी ही यहाँ आया हूँ। और अब मैं तुम्हारी जगह खड़ा होना चाहता हूँ।"

किसान बोला, "यह तो गलत बात है। मैं यहाँ एक घंटे से इंतेजार कर रहा हूँ। और तुम तो एक योद्धा हो। क्या तुम्हें कानून की रक्षा नहीं करनी चाहिए ?"

"यहाँ वही कानून चलेगा जो मैं बनाऊँगा," योद्धा ने कहा। "जैसा कि तुमने कहा, मैं एक योद्धा हूँ। क्या तुम्हें पता है कि मेरे पास एक तलवार है ? क्या तुम यह सोचते हो कि मैं तलवार चलाना जानता हूँ ? मुझे तलवारबाज़ी का प्रदर्शन करके खुशी होगी...ख़ासकर तुम पर।"

किसान बहुत नीचे तक झुका। वह यह देख पा रहा था कि योद्धा उसकी बात नहीं सुन रहा था। वह बोला,"मेरे पास कोई हथियार नहीं है, और मैं सब कुछ बिना सोचे-समझे बोला था। मुझे माफ़ कर दो। और कृपया मेरी जगह ले लो।"

"यह ठीक है," योद्धा बोला। "और चूँकि तुम्हें पंक्ति में खड़ा होना अच्छा लगता है, तो तुम क्यों नहीं सबसे पीछे जाकर फिर से खड़े हो जाते हो ?"

बेचारे किसान को यही करना पड़ा।

नदी पार करना

सारे टिकट बिक जाने के बाद नौका रवाना हुई। नदी को पार करते हुए यात्रियों की यात्रा फिर से शुरू हुई।

दिन उजाले से भरा था, और बोकुडेन इस अच्छे मौसम का आनंद लेने की सोच ही रहा था। वह सीट पर बैठा और अपनी आँखें बंद कर दी।

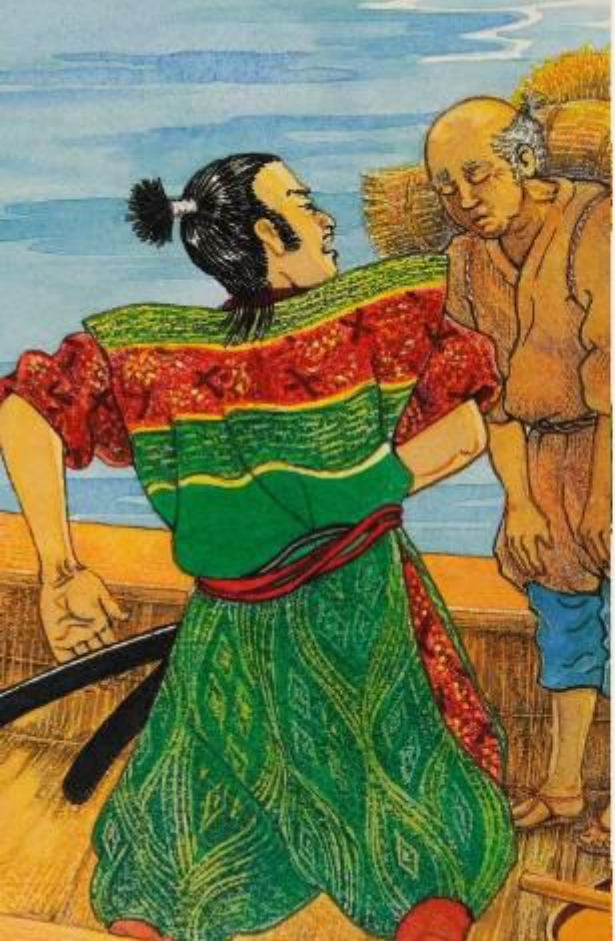

नौका अभी कुछ देर ही चली थी। वह गुस्सेल योद्धा नौका के तले की ओर अकड़कर आगे बढ़ा। "हटो !" उसने पास खड़े किसान से कहा।

"लेकिन मैं यहाँ पहले से खड़ा हूँ," किसान ने जवाब दिया।

"इससे क्या फ़र्क पड़ता है ?" योद्धा ने पूछा। "मैं यहाँ खड़ा होकर नज़ारे का आनंद लेना चाहता हूँ। क्या तुम्हें पता है कि मेरे पास एक तलवार है ? क्या तुम यह सोचते हो कि मैं तलवार चलाना जानता हूँ ?"

किसान पहले की तरह फिर से बहुत नीचे तक झुका।

उसने कहा, "मैं इस जगह पर खड़े रहने के लिए झगड़ना नहीं चाहता हूँ। मैं दूसरी जगह चला जाऊँगा।"

और वह झट से योद्धा से दूर भागा।

एक व्यापारी जिसने अच्छे कपड़े पहन रखे थे उसे योद्धा का यह बर्ताव अच्छा नहीं लगा। उसने कहा, "तुमने यह सही नहीं किया।"

योद्धा उसकी तरफ आगे बढ़ा। और बोला, "क्या तुम उसे सही बनाना चाहते हो ?"

"नहीं, नहीं," व्यापारी डरता-डरता बोला। "मैं ऐसे कपड़ों में नहीं लड़ सकता।"

"यदि मैं तुम्हारे छोटे-छोटे टुकड़ें कर दूँ तो यह फ़र्क नहीं पड़ेगा कि तुमने कैसे कपड़े पहने थे," योद्धा ने कहा।

व्यापारी ने अपनी कोमल कमीज़ को मज़बूती से पकड़ लिया। उसने कहा, "मुझे माफ़ करना। मुझे अपने कहे शब्दों पर खेद है।"

योद्धा बोला, "यदि मैंने तुम्हारी जीभ काटी होती तो तुम्हें इस बात की परेशानी भी नहीं होती।"

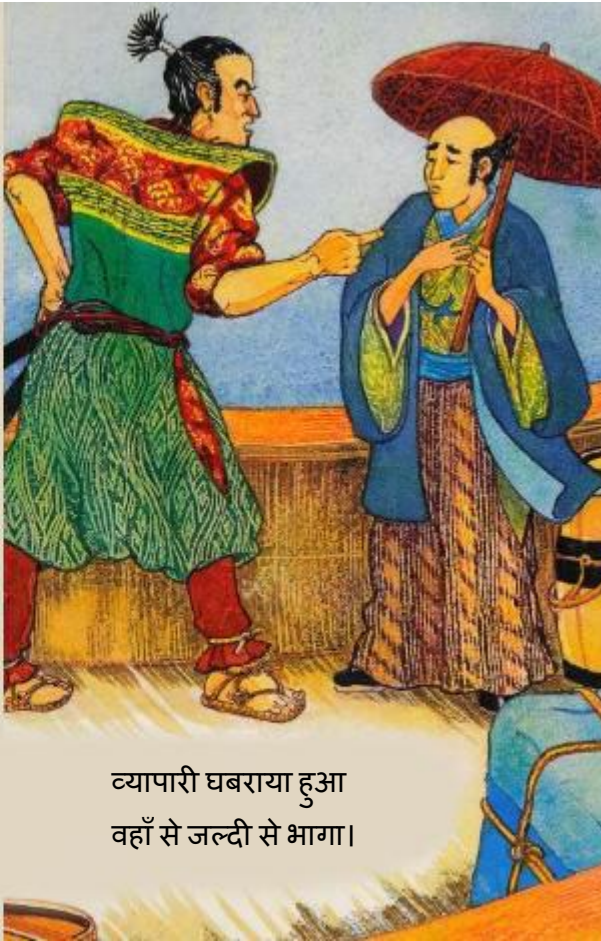

व्यापारी घबराया हुआ वहाँ से जल्दी से भागा।

"तुम सब डरी हुई मुर्गियों की तरह हो," योद्धा ज़ोर से बोला। "तुम सबको फिर से अपने सुरक्षित अंडों में घुस जाना चाहिए।"

दूसरे सारे यात्री योद्धा से दूर जाने लगे। अब सिर्फ़ बोकुडेन ही योद्धा के पास बैठा था। उसकी आँखें बंद थी। वह एक दम स्थिर बैठा था।

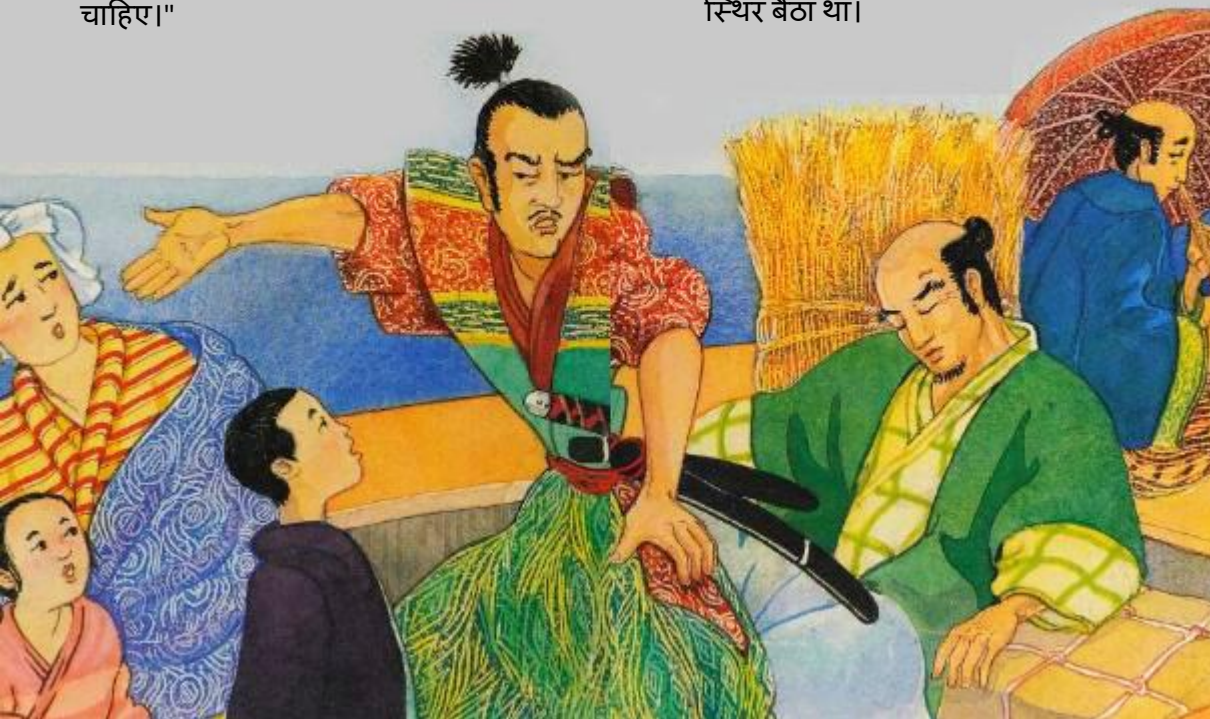

योद्धा ने अपनी तलवार बाहर निकाली और हवा में फहराने लगा। वह तलवार को ऊपर-नीचे, दायें-बायें चलाने लगा। वह तलवार को आगे करता फिर पीछे करता।

"तुम सब मुझे क्यों घूर रहे हो ?" योद्धा ने पूछा। "क्या कोई कुछ कहना चाहता है ?"

दो बच्चों ने अपने हाथ खड़े किए।

"हाँ, बोलो। क्या कहना चाहते हो ?" योद्धा बोला।

"क्या आपने बहुत सारी लड़ाइयां लड़ी हैं ?" एक बच्चे ने पूछा।

योद्धा ने अपना सिर हिलाया और कहा, "अनगिनत !"

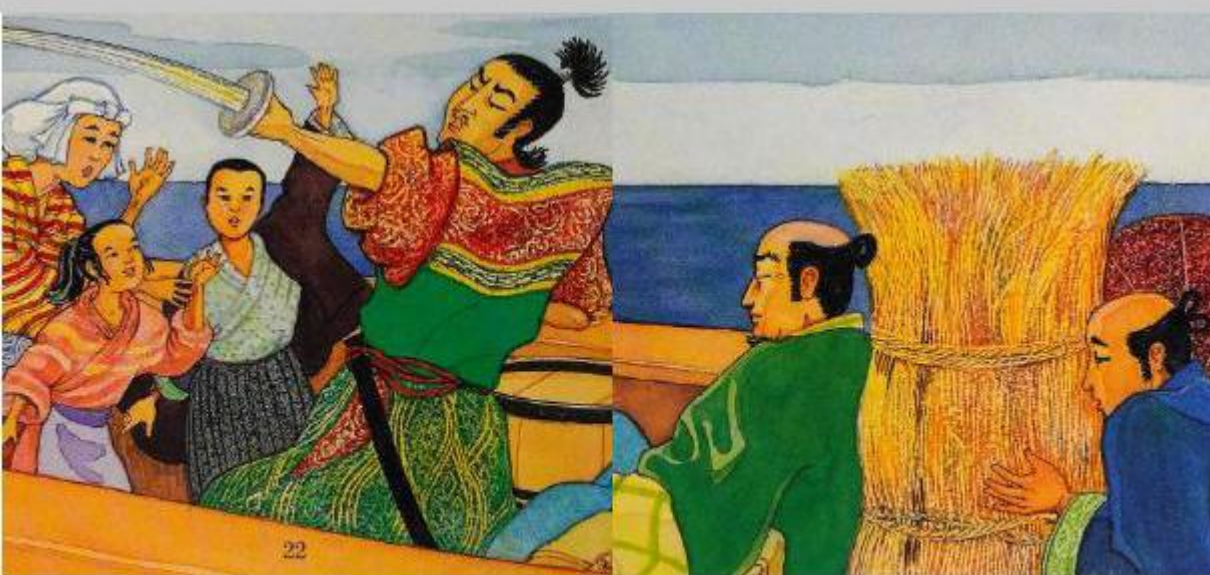

"क्या आप कभी घायल हुए हैं ?" दूसरे बच्चे ने पूछा।
योद्धा बोला, "मैं दूसरों को घायल करता हूँ, खुद को नहीं होने देता।"
किसी के नाक से खर्राटे की आवाज़ आई।
योद्धा ने गुस्सा होकर अपने आसपास नज़र घुमाई।
"ये आवाज़ किसने निकाली ? वह कौन था ?"
उसने पूछा।
किसी ने जवाब नहीं दिया।

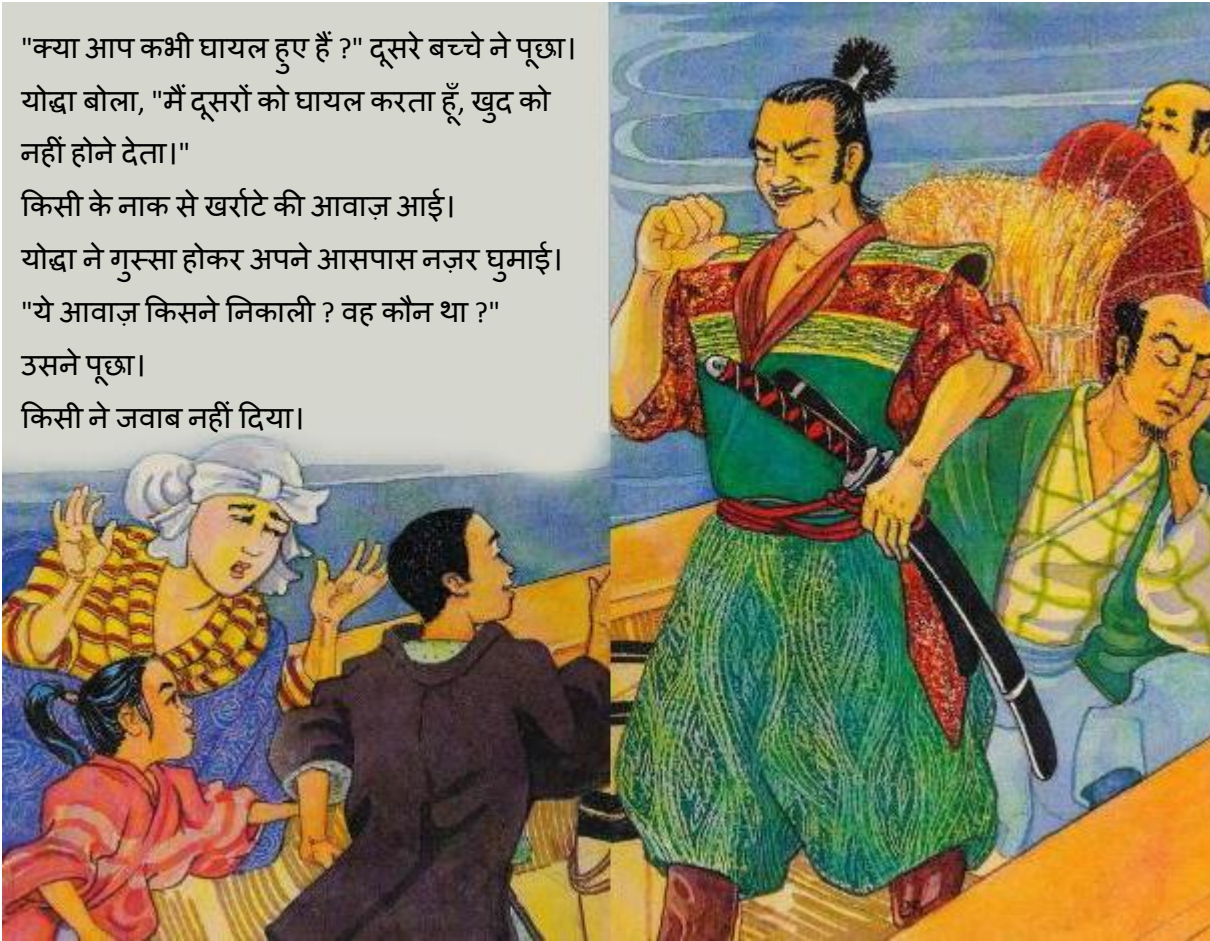

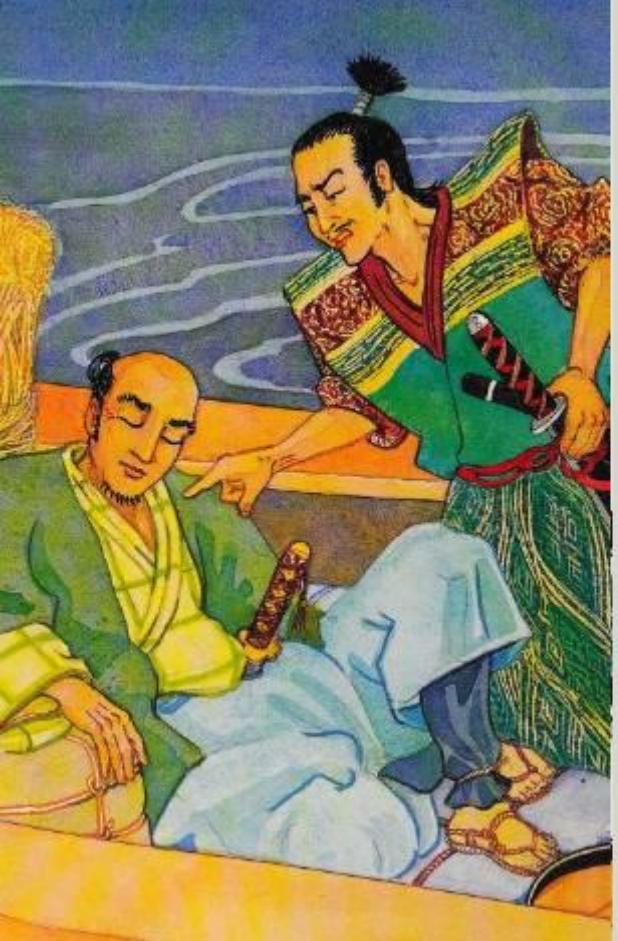

एक अलग कला

चारों ओर फैले हुए सन्नाटे से योद्धा संतुष्ट नहीं था। उसने कहा, "मैं यह पता लगा लूंगा कि मेरा मज़ाक कौन उड़ा रहा था। वो जो भी हो उसे अपनी करतूत की सज़ा ज़रूर मिलेगी।"

फिर से किसी के नाक से खर्राटे की आवाज़ आई।

इस बार योद्धा सीधा बोकुडेन की तरफ़ चल पढ़ा।

वह उस भले आदमी को घूरे जा रहा था।

"सुनो, तुम !" योद्धा बोला।

बोकुडेन की आँखें अभी भी बंद थी।

"मैं तुम से बात कर रहा हूँ," योद्धा ने कहा।

वह बोकुडेन के कंधे पर अपनी अंगुली से प्रहार करने लगा।

बोकुडेन ने अपनी आँखें खोली।
"मैं बहुत ही सुहावना सपना देख रहा था," उसने कहा।
"मुझे नहीं लगता कि तुम यह बता सकते हो कि वह सपना कैसे ख़त्म होता है।"

योद्धा बहुत तेज़ हँसता है।
"मेरे लिए ये कुछ भी मायने नहीं रखता है कि तुम्हारा सपना कैसे ख़त्म होता है।
तुम इन सब कीड़ों से तो बेहतर लगते हो।
तुम मेरी तलवारबाज़ी के बारे में क्या कहते हो ?"
"मुझे माफ़ करना," बोकुडेन ने कहा।
"क्या तुम कोई खेल या करतब कर रहे थे ?
मैं वास्तव में ध्यान नहीं दे रहा था।"

"तो अब ध्यान दे दो," योद्धा बोला, और फिर उसने अपनी तलवार से करतब दिखाना शुरू कर दिया।

जब उसने सब कुछ दिखा दिया, फिर वह बोकुडेन की ओर मुड़ा। "अब बताओ, तुम्हें यह सब देखकर कैसा लगा ?" उसने पूछा।

"बहुत सामान्य", बोकुडेन बोला।

"सामान्य !" योद्धा चिल्लाता हुआ बोला।

"तो फिर 100 में से किसी 1 भी आदमी के पास ऐसी काबिलियत क्यों नहीं है ?"

बोकुडेन अपने आसपास देखने लगा।

"चूँकि यहाँ तो 100 आदमी नहीं, इसलिए मुझे तुम्हारी बात ही माननी पड़ेगी।"

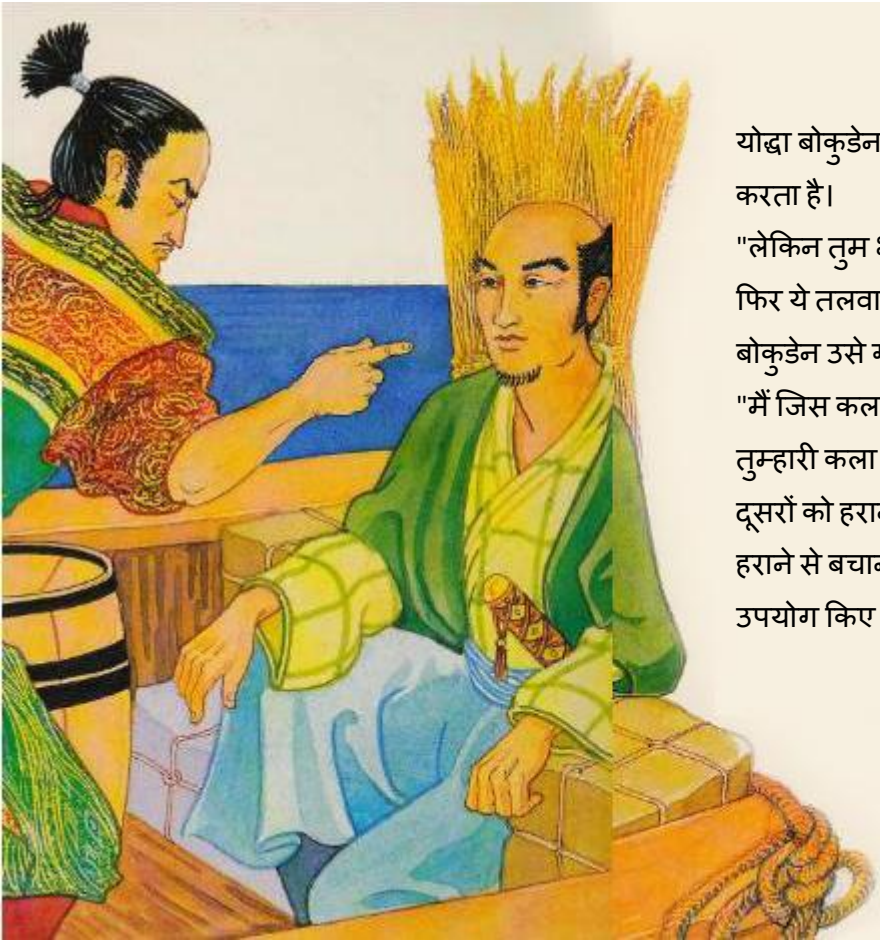

योद्धा बोकुडेन की तरफ़ हाथ से इशारा करता है।

"लेकिन तुम भी तो तलवारबाज़ हो। या फिर ये तलवार सिर्फ़ सजावट के लिए है ?"

बोकुडेन उसे गंभीरता से देख रहा था।

"मैं जिस कला का अभ्यास करता हूँ वो तुम्हारी कला से अलग है। मेरा लक्ष्य दूसरों को हराना नहीं है, बल्कि खुद को हराने से बचाना है। ये बिना तलवारों का उपयोग किए हुए लड़ने जैसा है।"

योद्धा हँसने लगा।
"मैंने ऐसा पहले कुछ भी नहीं सुना, क्या ऐसी कला तुम्हारे काम आती है ?"
बोकुडेन ने अपने दोनों हाथ फैलाकर थोड़े ऊपर किए। वह बोला, "अब तक तो काम आ रही है।"
योद्धा फिर से हँसने लगा।
"मैं तुम्हारी इस तलवार से बिना तलवारों वाली लड़ाई देखना चाहूँगा।"
"ठीक है," बोकुडेन ने कहा।

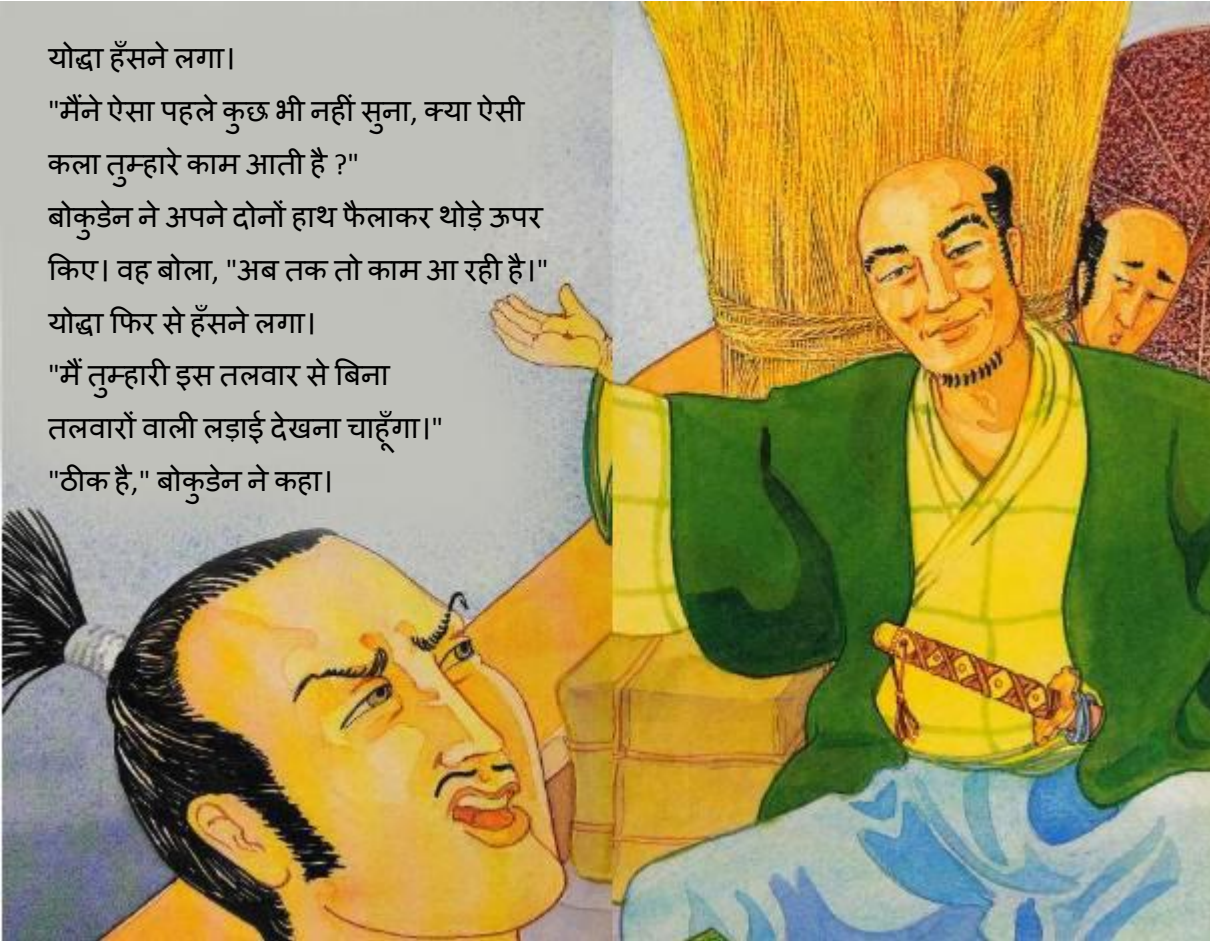

बोकुडेन किसी जगह की खोज कर रहा था।
"इस नौका पर तो हमारे बीच प्रतियोगिता नहीं हो सकती है। यहाँ इतनी जगह नहीं है। हम छोटी नाव पर बैठकर उस टापू पर जाते हैं।"
बोकुडेन ने टापू की ओर इशारा करते हुए बोला।

"वहाँ हमारे पास काफ़ी जगह होगी।"
योद्धा ने बात मान ली।
अब नौका पर बैठे अन्य यात्री भी रुचि लेने लगे। बोकुडेन और योद्धा दोनों नाव चलाकर टापू की ओर निकल पड़े।

एक तलवार से लड़ना

बोकुडेन और योद्धा दोनों टापू पहुँचे। योद्धा नाव से सीधा कूदकर किनारे पर जा खड़ा हुआ। उसे प्रतियोगिता शुरू करने की बहुत होड़ थी। उसने अभी से ही हवा में तलवार चलानी शुरू कर दी।

सूर्य की किरणें पड़ने से उसकी तलवार बहुत चमक रही थी। और वहाँ नौका पार बैठे सारे यात्री ये देखकर अचंभित थे।

योद्धा वास्तव में एक भयंकर लड़ाका था। उसकी तलवार बिजली की तरह चमक रही थी। उसके सामने भला कौन टिक सकता था ?

योद्धा खुद भी अपने बारे में ये सब सोच रहा था।
लेकिन उसने एक बात पर ध्यान नहीं दिया।
बोकुडेन उसके साथ टापू पर नहीं आया था।

वह अभी भी नाव में ही बैठा था।
"जल्दी करो," योद्धा बोला।
"मुझे इस प्रतियोगिता में ज़्यादा समय नहीं लगाना है। मैं तुम पर बिल्कुल दया नहीं करूँगा।"

इसके जवाब में, बोकुडेन ने चप्पू को पानी में डाल दिया।
"तुम कहाँ जा रहे हो ?" योद्धा ज़ोर से चिल्लाया।
"नौका की तरफ़," बोकुडेन ने कहा।
योद्धा हँसने लगा। और बोला, "लेकिन हम तो अभी तक लड़े भी नहीं, क्या तुम सच में डरपोक हो ?"

"सुकाहारा बोकुडेन में बहुत कुछ है," बोकुडेन ने जवाब दिया।
"शायद उनमें से सभी प्रशंसा के योग्य नहीं है। लेकिन वो कभी भी डरपोक नहीं कहलाया।"

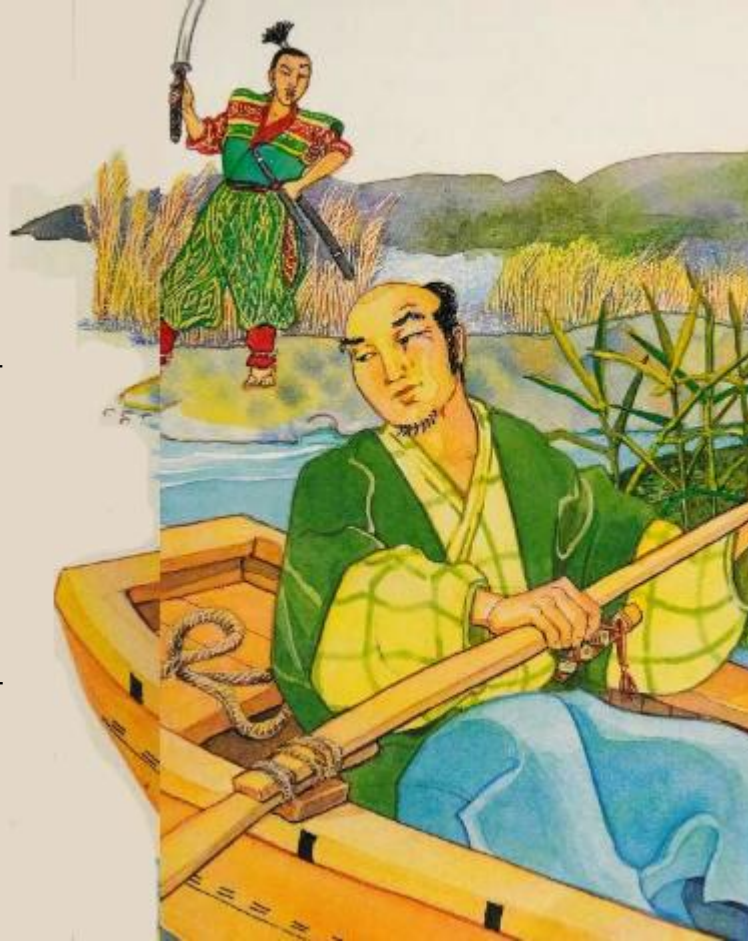

नौका पर बैठे सभी जने खुश हुए। सुकाहारा बोकुडेन पूरे जापान में सबसे महान तलवारबाज़ था। उसने घमंडी योद्धा से लड़ाई इसलिए नहीं की थी ताकि उसकी जान बच जाए।

"इसे कहते हैं बिना तलवार का उपयोग किए लड़ना," बोकुडेन आगे बढ़ता गया।

"और जब तक तुम खुद को एक अच्छे योद्धा के साथ-साथ एक अच्छा तैराक मानते रहोगे, तब तक तुम यह समझते रहना कि हमनें तुम्हें पहला सबक पढ़ा दिया।"

योद्धा को वहाँ छोड़कर बोकुडेन चप्पू चलाता हुआ आगे बढ़ गया।

समाप्त